# मतदान के महापर्व का संदेष

मतदान के तीन संदेष माने जाते है 1. अच्छे व्यक्ति का चयन 2. अच्छे दल का चयन 3. लोकतंत्र पर मुहर। दो हजार नौ मे सम्पन्न मतदान के महापर्व ने इन तीन विशयो पर क्या संदेष दिया यह गंभीरता से विचार करने योग्य है।

तीसरा संदेष है लोकतंत्र पर मुहर। अब तक पूरी दुनिया मे दो ही प्रकार की षासन व्यवस्थाएॅ प्रचलित है 1. तानाषाही 2. लोकतंत्र। दोनो के अलग अलग गुण दोश है। भारत मे यह बात तो आम नागरिक महसूस करता है कि लोकतंत्र भारत मे तो समाधान न होकर समस्या ही बना हुआ है किन्तु यदि लोकतंत्र के स्थान पर तानाषाही की चर्चा हो तो आम नागरिक उसकी कल्पना से ही सिहर उठता है। साम्यवाद या संध परिवार लोकतंत्र के नाम पर ही तानाषाही व्यवस्था का ताना बाना बुनते रहते है किन्तु वे भी प्रत्यक्ष तानाषाही का समर्थन नही करते। नक्सलवादी प्रत्यक्ष तानाषाही के समर्थक है किन्तु वे प्रत्यक्ष मतदान मे षामिल नही होते। इस तरह मतदान इस विशय पर बहस का मुददा बनाता ही नही और चुपचाप यह मतदान का अर्थ लोकतंत्र पर मुहर मान ली जाती है क्योकि लोकतंत्र का कोई अन्य विकल्प है ही नही। यदि लोकतंत्र हॉ या ना पर मतदान होना हो तो दो तिहाई बहुमत ना के पक्ष मे होगा क्योकि लोकतंत्र ने भारतीय जन मानस को दुख और अव्यवस्था के अतिरिक्त दिया ही क्या है ? किन्तु इसके समक्ष विकल्प का अभाव उसे लोकतंत्र के मामले मे चुप रहने को मजबूर कर देता है। यही कारण है कि यदि भारत के मतदाता को जाति ,धर्म षराब ,पैसा या भय से मुक्त कर दिया जाय तो बोट प्रतिषत बहुत ही नीचे गिरना निष्चित है । फिर क्यो जाय वह वोट देने। यही कारण रहा कि दो हजार नौ के चुनाव मे आम मतदाताओ को वोट देने जाने के लिये विषेश प्रयत्न के रूप मे अनेक प्रकार की अपीले की गई तब कही जाकर वोट प्रतिषत इतने तक आ पाया अन्यथा इतने कम प्रतिषत से भी कम होने की प्रत्यक्ष संभावना दिखने लगी थी।

तानाषाही के विक्ल्प रूप मे तो लोकतंत्र भारत मे स्थापित है जो पूरी तरह बदनाम भी हो चुका है किन्तु विकल्प के रूप मे लोक स्वराज्य षब्द ही अब तक अपरिचित है। इक्का दुक्का क्षेत्रों मे इस षब्द का प्रयोग इस चुनाव मे षुरू हुआ। लोकस्वराज्य अभियान के नाम से गांधीवादी संस्थाओ ने मिल जुलकर यह पहल की या स्वराज्य अभियान के नाम से अरविन्द केजरीवाल जी का गुप खडा हुआ किन्तु अभी बिल्कुल ही प्राथमिक स्तर पर होने से यह प्रयत्न चर्चा का विशय नही बन पाया जो अगले आम चुनाव तक तो विकल्प बनना निष्चित ही है।

पिछले तीस चालीस वर्शो से दल की अपेक्षा व्यक्ति का महत्व चुनावो मे बढता गया। दल केन्द्रित लोकतंत्र के स्थान पर दल विकेन्दिव्र लोकतंत्र मजबूत होने लगा । हर जगह नये नये दल बनने भी लगे और षासन व्यवस्था मे षामिल भी होने लगे । हमारे क्षेत्र का विकास या तो अच्छा आदमी करेगा या अपना आदमी। दल का या दल की नीतियो का उससे अधिक महत्व नही । धीरे धीरे दलीय विचार धारा, दलीय अनुषासन या दलीय प्रचार का महत्व कम से कम होने लगा। इस चुनाव के पूर्व तो ऐसा वातावरण दिखा कि दलीय प्रतिवद्धता षून्य होती जा रही है । कौन कब दल बदल कर नया दल बना लेगा या विरोधी दल मे चला जायगा इसकी कोई सीमा ही नही रही। गठबंधन का दौर आया और फिर इस चुनाव मे तो गठबंधनो की संख्या भी बढते बढते चार बन गई है। इन चार मे भी भीतर मे कई गठबंधन बन ही रहे थे। ऐसा लगने लगा था कि भारत लगातार एक निर्दलीय लोकतंत्र की दिषा मे बढ रहा है जिसमें सत्ता मे षामिल और सत्ता से बाहर रहने वाले दलो के पॉच सौ तेतांलिस सांसद बढते बढते कई सौ दलो का प्रतिनिधित्व करने लगे जो अप्रत्यक्ष रूप से जय प्रकाष जी का दलविहीन लोकतंत्र कहा जा सकता है। जय प्रकाष जी उसे कानूनी स्वरूप देकर दल मुक्त व्यवस्था के पक्षधरथे जबकि भारतीय लोकतंत्र की दिषा मे हर व्यक्ति ही अपने को दल कहकर उस कमी को पूरा करने जा रहा था।

इस विकेन्दित दल प्रणाली ने दलो की तानाषाही तो खतम की किन्तु व्यक्तियो को बेलगाम कर दिया। पांच वर्शो तक छोटे छोटे दलों ने सरकार को बिल्कुल चलने ही नही दिया। राजनीति पुरी तरह व्यवसाय बन गई । अनुषासन रहा ही नही। विषुद्ध सौदेबाजी और बाद मे तो बदलकर ब्लैक मेल षुरू हो गया। मतदाताओ को लुभाने की असंभव धोशणाएॅ की जाने लगी। महसूस किया जाने लगा कि इस प्रणाली से चलना या सरकार चलाना संभव नही । तब वर्तमान चुनावो मे मतदाताओ ने फिर से द्विदलीय प्रणाली की ओर बढना षुरू किया जिसमे एक दल कांग्रेस का रहा और दूसरा भाजपा का।

KASHIINDIA

मतदाताओ ने सबसे पहले उन छोटे दलो को रस्ता दिखाया जिन्होने ज्यादा ब्लैकमेल किया। लालू प्रसाद यादव रामबिलास पासवान , मुलायम सिह , मायावती, षरद पवार, जय ललिता, करूणानिधि आदि ने पिछले पांच वर्शो तक लोकतंत्र को मखौलतंत्र बनाकर रख दिया था। न कोई नीति न कार्यक्रम न कोई षर्म न लेहाज । न अपने चरित्र की कीमत रही न दूसरो की । सबका स्तर गिराते ही चले गये। कार्यपालिका ने तो समझौता कर लिया और न्यायपालिका थक गई अपराधी खुलेआम संरक्षण पाने लगे। सभी दल गिरावट की दौड में आगे निकलने लगे। ऐसे सभी छोटे छोटे दलो को चुनाव ने बौना बना दिया। इतना बौना कि आजकल उनका एक एक षब्द षालीन हो गया है।

चार पांच दल इस सूची से बाहर रह गये हैं उनमे जनता दल युनाइटेड तृणमूल कांग्रेस तथा बीजू जनतादल षामिल है जनता दल यू के नीतिष कुमार की तथा नवीन पटनायक की व्यक्तिगत छवि इसमे बहुत काम आई। पूरे पांच वर्श तक दोनो ने बहुत गंभीर छवि बनाकर रखी। षरद यादव या जार्ज फर्नान्डीस मे चाहे जितना उबाल आया हो किन्तु नीतिष कुमार षान्त बने रहे। लालू प्रसाद के जोक्स के बाद भी नीतिष ने अपना आपा नही खोया । इसी तरह उडीसा के नवीन पटनायक का भी हाल रहा। भाजपा ने कंधमाल मे इसाइयो के खिलाफ जो कुछ भी किया उसमे नवीन पटनायक कही अधीर नही हुए। षान्त भाव से सब कुछ झेलते रहे और निर्णय जनता पर छोड दिया। परिणाम उडीसा मे भाजपा को भुगतना पडा और विहार मे कांग्रेस को। लालू पासवान तो निपटने थे ही । बंगाल मे ममता को और निपटना आवष्यक था। ममता बनर्जी भी किसी भी रूप मे अच्छे लोगो के समूह मे चलने लायक नही किन्तु कांटे से काटा निकालने की मजबूरी ने ममता बनर्जी को इस चुनाव मे जिन्दा करना पडा अन्यथा वह भी निपटने लायक ही थी। वामपंथी भाजपा और काग्रेस के बीच सैध्दान्तिक टकराव था। वामपंथ मे बुद्धदेव भटटाचार्य को षालीन माना जाता है और प्रकाष करात को उच्श्रृखल। प्रकाष करात ने समूचे वामपंथ को अपनी मुटठी मे करके वुद्धदेव जी आदि को इतना निश्क्रय कर दिया कि बंगाल तक मे वे कुछ नही कर सके। पिछले पांच वर्शो मे मनमोहन सिह सरकार के समय लोकतंत्र के दुरूपयोग का सर्वाधिक दोशी प्रकाष करात को माना जा सकता है । उनकी भूमिका पूरी तरह खलनायक की रही है। जोकर मे तो लालू आदि कई लोगो को गिना जा सकता है किन्तु खलनायक का श्रेय तो अकेले करात जी को ही देना पडेगा। प्रतिदिन बडी बडी बाते बडी बडी धमकियॉ और वह भी बिल्कुल निचले स्तर की सुनते सुनते भारत का मतदाता धैर्य खो बैठा। करात जी ने उस समय क्या नही किया यहॉ तक कि सारी षालीनता को छोडकर सोमनाथ चटर्जी तक पर हमला करने से नही चूके। वुद्धदेव भटटाचार्य , ज्योतिबसु को तो इन्होने कुछ समझा ही नही । प्रकाष करात स्टेलिन की राह पर तेजी से चले किन्तु भूल गये कि भारत मे रूस की साम्यवादी सरकार न होकर लोकतंत्र है जिसमे भी साम्यवाद मुख्य विपक्षी दल न होकर एक छोटा सा सहयोगी दल मात्र ही है। जो होना था वही हुआ। प्रकाष करात नायक तो बन ही नही सके उल्टे खलनायकी से भी हाथ धो बैठे।

अब समीक्षा करनी है भाजपा की। भाजपा के पास प्रादेषिक सफल चरित्र तो कांग्रेस से बहुत ज्यादा है किन्तु केन्द्रीय चरित्र के मामले मे वह पिछड गई। न अडवानी जी मनमोहन सिह का मुकाबला कर पाये न ही राजनाथ सिह सोनिया गांधी का । नीतियो के मामले मे तो कुछ विशयो मे कांग्रेस की नीतियॉ ठीक है तो कुछ मे भाजपा की । धोशणा पत्र काग्रेस की अपेक्षा भाजपा का अधिक गंभीर तथा आकर्शक था किन्तु गंभीरता और त्याग भाव के मामले मे दोनो की दूर दूर तक कोई तुलना नही हो सकती। मनमोहन सिह के सामने अडवाणी जी बिल्कुल ही बौने दिखते रहे । चुनौती देने या ललकारने की प्रतिस्पर्धा मे तो अडवाणी जी बाजी मार ले गये किन्तु गंभीरता और सहनषीलता मे वे मनमोहन सिह के सामने जरा भी नही टिक सके। राहुल गांधी के परिपक्व भाशणो ने रही सही कसर भी पूरी कर दी। यदि राश्ट्रीय स्तर पर दोनो दलो की समीक्षा करे तो मनमोहन सिह सोनिया गांधी के समक्ष अडवाणी राजनाथ की जोडी की जमानत भी नहीं बच सकती किन्तु श्रेत्रीय श्रत्रप रमण सिह नरेन्द्र मोदी षिवराज सिह चौहान येदुंरप्पा ने ऐसी सफल बैटिंग की कि इनकी लाज बच गई। इन चारो की षालीनता और प्रषासनिक सफलता के समक्ष कांग्रेंस की आंधी भी भाजपा को खतमनही कर सकी और भाजपा सम्मानपूर्वक प्रतिपक्ष के लायक रह गई ।

इस चुनाव ने बिलकुल साफ संदेष दिया है । बडबोले पन का अब कोई महत्व नही रह गयाहै । चरित्र और प्रषासनिक कुषलता ही कसौटी है। छत्तीसगढ मे जोगी जी की जगह रमण सिह का उभार साफ संकेत है। नीतिष कुमार नवीन पटनायक , भूपेन्द्र सिह हुडडा, षीला दीक्षित रमण सिह येदुरप्पा ,नरेन्द्र मोदी षिवराज चौहान अलग अलग दलो मे होते हुए भी अप्रभावित रहे है। सोनिया मनमोहन जोडी ने खलनायक प्रकाष करात को चारो खाने चित कर ही दिया है किन्तु अडवाणी राजनाथ की जोडी से भी बहुत आगे निकल गये है। लोकतंत्र ने एक करवट ले ली है भलें ही लोकस्वराजय के लिये अभी इसे अच्छा या बुरा नही कहा जा सकता किन्तु भारतीय लोकतंत्र के लिये यह एक षुभ लक्षण है। आडवाणी

KASHINDIA

जी को चाहिये कि हाय तोबा मचाकर आइने को तोड फोड करने की अपेक्षा षालीनता पूर्वक अपना चेहरा सुधारने का प्रयत्न करे तो लोकतंत्र के लिये बहुत ही अच्छा होगा।

## कार्यालयीन प्रष्नो के उत्तर

प्रष्न 1. आपने लिखा है कि ज्ञानतत्व की भूमिका सिर्फ विचार मंथन तक ही सीमित है विचार प्रचार नही । हम लोग बराबर ज्ञानतत्व पढते है तो लगता है कि आप भी विचार प्रचार मे ही लगे हुए है । आपने इसी अंक मे हिन्दू संस्कृति और भारतीय संस्कृति को अलग अलग बताया है संस्कार का निर्माण कैसे होता है । संस्कार व्यक्तिगत होता है या सामूहिक? संस्कार और विचार का क्या संबंध है?

उत्तर. विचार का संबंध तर्क से है और संस्कार का भावना से । विचार मस्तिश्क का विशय है और संस्कार हृदय का । दोनो का एक दूसरे से संबंध तो होता है किन्तु निर्णायक संबंध नही होता। विचार निश्कर्श निकालता है। यह निश्कर्श यदि क्रिया मे बदलता है तो आदत बन जाती है। ऐसीआदत बिना सोचे समझे ही लगातार व्यवहार मे षामिल हो जावे तब संस्कार बन जाती है । यदि किसी व्यक्ति के अपने स्वयं के निश्कर्श संस्कार बन जावे तो वह आदर्ष स्थिति होती है । किन्तु ऐसा आमतौर पर होता नही। बहुत बिरले ही लोग अपने संस्कारो को अपने ही विचारो के आंरी पर बना पाते है । आम तौर पर समाज मे संस्कार दूसरो द्वारा ही प्राप्त होते है । ये दूसरे लोग माता पिता गुरू भी हो सकते है या अन्य कोई महापुरूश भी। कभी कभी ऐसे संस्कार मृत महापुरूशो के प्रचलित विचारो से भी मिल जाया करते है।

संस्कारो मे लगातार बदलाव होता रहता है । जीवन मे चलते चलते यह क्रम जारी रहता है। इस बदलाव पर प्रचार का बहुत प्रभाव पडता है। भारत की अधिकांष आबादी मूल रूप से हिन्दू होने से उन पर हिन्दू संस्कृति का व्यापक प्रभाव है किन्तु वर्तमान भारत मे अन्य धर्मावलम्बी भी या तो आकर या धर्म बदलकर भारतीय बन गये। ऐसे लोगो का भी हिन्दू संस्कृति से सामंजस्य हुआ । साथ ही भारत के आम नागरिको को कई सौ वर्शो की तानाषाही के बाद मिली स्वतंत्रता ने भी संस्कारो मे बदलाव किया। यह सामूहिक संस्कार ही भारतीय संस्कृति बना। इसमे अपने धार्मिक समूहो मे तो अलग अलग गुण मौजूद ही है किन्तु सबके बीच एकसाझा संस्कार विकसित हुआ है कि न्यूनतम प्रयत्न के परिणाम स्वरूप अधिकतम लाभ प्राप्त करने की सफलता चाहे इसके लिये नैतिक या अनैतिक कोई भी प्रयत्न क्यो न करना पडे। यह नैतिक या अनैतिक षब्द ही भारतीय संस्कृति की मूल पहचान बनता जा रहा है जो हिन्दू संस्कृति से भी दूर है और इस्लाम या इसाइयत से भी।

विचार प्रचार के लिये विचार मंथन को किसी निश्कर्श तक पहुॅचाना आवष्यक होता है। पच्चीस दिसम्बर दो हजार आठ तक मै समाज की सभी प्रमुख समस्याओ के समाधान के रूप मे लोक स्वराज्य को मानने तक पहुॅच सका और इसके प्रचार मे लग गया। किन्तु इसके बाद भी अन्य छोटी बडी समस्याओ पर विचार मंथन तो चलता ही रहेगा। ज्ञानतत्व ऐसे विचार मंथन के लिये ही समर्पित है। लोक स्वराज्य संबंधी अधिकांष विचार या योजनाएॅ ज्ञानतत्व के उत्तार्ध मे जाती है । आपसे निवेदन है क्रि आप ज्ञान तत्व को विचार प्रचार की पत्रिका न माने । मेरे अपने स्वय के विचारो मे निरंतर बदलाव होता रहता है। साथ ही ज्ञानतत्व मे विरोधी विचारो को भी पूरा पूरा स्थान दिया जाता है ।

प्रष्न 2. सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड मुख्य न्यायाधीष श्री जे एस वर्मा जी ने कहा है कि भारत की सम्पुर्ण अव्यवस्था के लिये समाज दोशी है । समाज यदि ठीक हो जावे तो सब ठीक हो जायगा।

उत्तर. समाज से निकलकर जो भी व्यक्ति व्यवस्था मे आता है उन सबको यही एक बात दिखती है कि सारा दोश समाज का ही है । श्री वर्मा जी कोई अकेले व्यक्ति नही है । जो भी उस संवैधानिक व्यवस्था का अन्न खा लेता हैया खाता रहता

KASHINDIA

है उसे मरते तक भीश्म पितामह के अतिरिक्त कोई भूमिका दिखती ही नही । ये लोग अन्त तक यह मानने के लिये तैयार ही नही है कि लोकतंत्र यदि जीवन पद्धति मे न आकर षासन पद्धति मे आया है तो उसे ठीक करने का लोक स्वराज्य के अतिरिक्त कोई अन्य तरीका ही नही है । ये जो भी बडे बडे लोग है इन्हे किताबी ज्ञान भी है और संवैधानिक कानूनी भी समाज षास्त्र इन्होने न कभी पढा न समझा। यही कारण है कि इनको हर बात मे समाज ही दोशी दिखता है । यदि समाज को स्वय ही ठीक होना है तो आप क्यो उसे गुलाम बनाकर रखे हुए है?

वर्मा जी मुख्य न्याययधीष के रूप मे समाज को कानूनो में बाधने के कोई कम प्रयत्न तो किये नही होगे। न्यायपालिका,विधायिका और कार्यपालिका ने लोकतंत्र रूपी अस्पताल का डाक्टर बनकर समाज का इलाज षुरू किया है। साठ वर्शो मे मरीज का हाल बिगड रहा है। अब डाक्टर मरीज को ही दोशी बता रहा है जबकि मरीज दिन रात डाक्टर के आई सी यू मे ही भर्ती है। जो लोग वर्तमान व्यवस्था का अन्न खाकर पूरी इमानदारी से लोकतंत्र का गुणगान कर रहे है ये सभी भीश्म पितामह द्रोणाचार्य आदि हमारा मनोबल तोडकर हमे गुमराह करना चाहते है। इनके प्रचार से बचना चाहिये।

प्रष्न 3. आपने वामपंथी को दुलमुल कैसे लिखा । वास्तविकता तो यह है कि वे अन्य किसी भी राजनैतिक दल की अपेक्षा सर्वाधिक स्थिर चित्त होते है।

उत्तर. न कभी वामपंथ दुलमुल होता है न वामपंथी। पहली बार वामपंथ इस अव्यवस्था का षिकार हुआ है। वामपंथ एकमात्र ऐसा राजनैतिक व्यक्ति समूह है जिसमें सिर्फ बुद्धिजीवी ही टिक पाता है भावना प्रधान व्यक्ति रह ही नही सकता। वामपंथ की प्रत्येक नीति दीर्धकालिक तथा सुविचारित होती है। इनका एकमात्र लक्ष्य होता है सत्ता किन्तु इनका हर कदम पूरी तरह अनुषासित रहता है । ये मानते है कि अव्यवस्था और असंतोश एक दूसरे के पूरक होते है न्याय की अधिकाधिक मांग करने से अव्यवस्था पैदा होती है और अव्यवस्था से समाज मे असंतोश बढता है इसलिये वामपंथी हमेषा न्याय की अधिकाधिक मांग करता रहता है । वामपंथ मे व्यक्तिगत कुछ होता ही नही । जो कुछ भी होता है वह सब सामूहिक ही होता है । इसलिये कोई भी वामपंथी व्यक्तिगत आचरण मे न कभी भ्रश्ट होता है न इमानदार। क्यो कि उसका आचरण कभी व्यक्तिगत होता ही नही।

बुद्धदेव भटटाचार्य ,सोमनाथ चटर्जी आदि ने वामपंथ की मूल अवधारणा को छोडकर नैतिकता और समस्याओ के समाधान की राह पकड ली। इनके इन प्रयत्नो से इन्हे प्रषंसा तो खूब मिली किन्तु अनुषासन कमजोर होने लगा। वामपंथ की एकमात्र नजर तो सत्ता पर रहती है और ये लोग समस्याओ के समाधान मे लग गये। इसलिये वामपंथ मे दो धाराए बनने लगी। प्रकाष करात कटरपंथी होते हुये भी इस नई धारा को रोक नही पाये।परिणाम हुआ कि वामपंथ अपनी राह से भटक गया। ममता बनर्जी की कोई धारा तो थी नही। वह तो वामपंथ को राह से भटकाना चाहती थी। नक्सल वादियो तथा असंतुश्ट वामपंथियो तक से उसने सामंजस्य बना लिया। मैने ज्ञानतत्व अंक एक सौ अठाइस दिनांक एक से पंद्रह मार्च दो हजार सात मे भारत के गोर्बाचोव वुद्धदेव भटटाचार्य षीर्शक लेख लिखकर यह संभावना व्यक्त की थी " 1. वुद्धदेव जी ने यथार्थ वादी दृश्टि कोण अपनाकर गोर्वाचोव की राह पकडी जो न्यायसंगत भी है तर्क संगत भी किन्तु वह राह भारत मे साम्यवाद को सदा सदा के लिये समाप्त कर सकती है। 2.वुद्धदेव जी यह कदम उठाने के पूर्व यह भूल गये कि भारतीय राजनीति मे न्याय और तर्क का कोई स्थान नही हैं यदि आप कमजोर होगे तो आपके अपने लोग भी आप पर चील कौओ के समान टूट पडने मे हिचकेगे नही। अच्छा होगा कि यदि आप बंगाल की जनता का आर्थिक विकास करने का निष्चय ही कर चुके हो तो आप अपने राजनैतिक बलिदान की पूर्व तैयारी करके ही आगे बढे तो अच्छा होगा। "

मैने उस समय जो कुछ लिखा वह पूरी तरह सच सिद्ध हुआ। ममता और कांग्रेस तक एक साथ खडे दिखे। इस तरह वामपंथ कमजोर होने लगा क्योकि उसने अपनी राह छोडकर समस्याओ के समाधान की राह पकड ली और वह भी अन्य दलो के समान आंतरिक असंतोश का षिकार हो गया। सत्य को असत्य और असत्य को सत्य के समान स्थापित करने की जो क्षमता और कला वामपंथिओ के पास है वह अन्य किसी के पास नही। अब वामपंथी अपनी राह छोडकर सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहना षुरू कर दे तो उनकी असफलता तो निष्चित है ही।

वामपंथ को अपना ढुलमुल रवैया छोडकर एक स्पश्ट दिषा पकडनी होगी। या तो वह विष्व व्यवस्था के साथ तालमेल करके वुद्धदेव सोमनाथ चटर्जी की राह पर चले या प्रकाष करात आदि की पुरानी संधर्श की राह पर । यदि राह साफ नही होगी तो कार्यकर्ता भ्रम मे रहेगा। इसलिये साम्यवाद को पहले नीतियॉ साफ कर लेनी चाहिये।

KASHMIR INDIA

प्रष्न 4. आपने लिखा है कि हिन्दू नुकसान उठा सकता है किन्तु कर नही सकता। क्या हिन्दुओं ने अवर्णो के साथ अत्याचार नही किया ? क्या यह आत्याचार उन अवर्णो का नुकसान नही था ?

उत्तर . मुझे लगता है कि आपको समाज षास्त्र का ज्ञान नही है। हिन्दु समाज व्यवस्था ने वर्ण व्यवस्था स्वीकार की थी। इस व्यवस्था मे नीति निर्धारण का काम करने वालो को ब्रहमण कहा जाता था। इनसे भी उपर ऋशि मुनि वानप्रस्थी सन्यासी आदि हुआ करते थे। इन सबकी नीतियो का आंख मूँदकर पालन षेश समाज करता था। इन नीति निर्धारको ने प्रति लोम विवाह को कठोरता से रोक दिया और ऐसा करना दण्डनीय अपराध बना दिया। किन्तु विवाह करना एक स्त्री और एक पुरूश का मूल अधिकार होने से कोई राजा भी इस अधिकार मे बाधा नही डाल सकता है इसलिये प्रतिलोम विवाह अनैतिक तक ही सीमित रहा । न यह अपराध बना न गैर कानूनी। ऐसे अनैतिक कार्य के लिये किसी व्यक्ति को सामाजिक सीमाओ तक ही दण्ड देना संभव था। समाज किसी को न पीट सकता था न जेल मे डाल सकता था वह तो सिर्फ बहिश्कार ही कर सकता था। वह उसने किया। ऐसी नीति बनते समय यह भूल हुई कि उसके समापन की कोई नीति नही बनी जैसा वर्तमान संविधान मे आरक्षण के मामले मे हुआ या हो रहा है। दूसरी विकृति यह आई कि वर्ण व्यवस्था कर्म से हटकर जन्म पर आधारित होगई। इससे नीति निर्धारको की योग्यता धटती गई। संषोधन का मार्ग था नही। लम्बा समय बीतता गया और अवर्णो के साथ अन्याय बढता गया। जिस हिन्दू समाज को इसके लिये गालिया दी जाती है उसने तो सिर्फ अपने धर्म प्रमुखो की बनाई नीतियो का पालन मात्र किया है। वह अवर्णो का षत्रु नही था। उसकी इतनी ही भूल रही कि पुरानी गलत परंपराओ को सुधारने का प्रयत्न उसने नही किया। जो काम मैने चौदह वर्श की उम्र मे किया वह आम या कुछ खास हिन्दुओ को पूर्व मे ही कर देना चाहिये था जिसका परिणाम वे आज भी भुगत रहे है। यह उनकी व्यवस्था गत भूल रही न कि व्यक्तिगत अपराध।

प्रष्न उठता हैकि मैने वाल्यकाल मे सवर्ण रूढिवाद से विद्रोह भी किया और संधर्श भी। मेरे प्रयत्नो से सवर्णो मे व्यापकपरिवर्तन आया। किन्तु मेरे प्रयत्नो को कमजोर किया अवर्ण नेताओ ने। उनका संकट यह था कि मेरे प्रयत्न वर्ग समन्वय की दिषा मे बढ रहे थे और उनके वर्ग संधर्श के प्रयत्नो को कमजोर कर रहे थे। अब आप विचार करिये कि जिन अवर्णो ने मेरे प्रयत्नो का विरोध किया उनके कार्य मेरे प्रति अत्याचार थे या नही ? जिस तरह कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था को जन्म आधारित बनाकर कुछ उच्च सवर्णो ने गलत किया उसी तरह वर्तमान अवर्ण नेताओ ने मेरे प्रति अन्याय किया।

मैने लिखा कि हिन्दु अन्याय सह सकता है किन्तु कर नही सकता। इसमे गलत क्या है? यदि हिन्दुओ ने अवर्णो पर अत्याचार किया तो किस धर्म पर किस धर्म ने किया ? क्या हिन्दुओ ने मुसलमानो इसाइयो पर अत्याचार किया ? हिन्दू ने हिन्दू पर अत्याचार किया इसमे हिन्दू समुदाय अत्याचारी कैसे हो गया ? आप कोई ऐसा उदाहरण बताइये जिसके अनुसार आम हिन्दु किसी दूसरे धर्म वाले पर कोई अत्याचार करता हो । यदि उसने अपना धर्म बदल कर वह इसाई मुसलमान सिख साम्यवादी या संध परिवार वाला बन जावे तो उसकी जिम्मेदारी हिन्दू संस्कृति की नही। हिन्दृ संस्कृति ने अनेक भयंकर भूलें की है किन्तु नुकसान अपना ही उठाया है दूसरो का नही इसलिये आपका प्रष्न उचित नही।

प्रष्न 5. आपने लिखा है हमारे देष के राजनेताओ ने हिन्दू कोड बिल तथा आरक्षण के दो कीले हिन्दू धर्म की छाती मे ठोक दिये। आपका इषारा नेहरू जी तथा अम्बेडकर जी की तरफ रहा। आप इतना गंभीर आरोप किस आधार पर लगा रहे है ?

उत्तर . हिन्दू कोड बिल के प्रावधानो मे से कुछ ने हिन्दू धर्म की कुरीतियो को दूर किया और कुछ ने बढा दिया। बल्कि सच्चाई यह है कि कुरीति बढाने वाले प्रावधानो ने तो समाज व्यवस्था पर तत्काल प्रभाव डालना षुरू कर दिया किन्तु सुधार वाले प्रावधानो का आज तक बहुत मामूली सा असर हुआ है। व्यवस्था के ठीक ढंग से चलने के लिये व्यक्ति परिवार और समाज के अधिकारो का संतुलित तथा स्पश्ट विभाजन आवष्यक होता है। यदि विभाजन संतुलित न हो तो अव्यवस्था हो जाती है और स्पश्ट न हो तो टकराव होता है। अम्बेडकर और नेहरू को संस्कृति का अच्छा ज्ञान नही था। दोनो ने ही पष्चिमी सभ्यता और संस्कृति मे रहकर सबकुछ सीखा था। पष्चिम मे व्यवस्था के दो ही धटक है 1. व्यक्ति 2. समाज। भारत मे व्यवस्था त्रिस्तरीय है 1. व्यक्ति 2. परिवार 3. समाज। नेहरू और अम्बेडकर को अपने उपर इतना धमण्ड था कि वे स्वय को धर्म षास्त्र का भी सर्वोच्च जानकार समझते थे और समाज षास्त्र का भी। राजनीति षास्त्र के ज्ञाता तो वे थे ही। किन्तु इन दोनो को तो इतना भी ज्ञान नही था कि धर्म और समाज मे क्या फर्क होता है अथवा धर्म और समाज का राज्य

KASHINDIA

से कैसा तालमेल होना चाहिये। किन्तु दोनो ने बिना जानकारी के त्रिस्तरीय समाज व्यवस्था के साथ छेडछाड करके उसे पूरी तरह चौपट करके हम पर थोप दिया। यदि ये इस सम्बन्ध मे सलाह तक भी सीमित रहते तो कोई खास नुकसान नही था किन्तु इन दोनो ने सेना पुलिस और न्यायालय का उपयोग करके सारी व्यवस्था को अस्त व्यस्त कर दिया।

भारत मे जो व्यवस्था चल रही थी उसमे व्यक्ति पर परिवार और परिवार पर समाज आवष्यकता से अधिक हावी था। इससे व्यक्ति पर कई तरह के अन्याय और अत्याचार होते थे। ऐसी विकृत समाज व्यवस्था मे सुधार या संषोधन का भी मार्ग नही था किन्तु ऐसा मार्ग अनेक महा पुरूश लगातार खोज जरूर रहे थे। इन दोनो ने एकाएक हिन्दू कोड बिल बनाकर समाज व्यवस्था को भी। कमजोर किया और परिवार व्यवस्था को भी इनदोनो ने ऐसे कानून बनाये कि इन कानूनो ने समाज और परिवार की अपेक्षा व्यक्ति को बहुत अधिक मजबुत बना दिया। पहले संतुलन का पलडा समाज और परिवार की तरफ झुका हुआ था जो अब पूरी तरह असंतुलित होकर व्यक्ति की ओर झुक गया।यह असंतुलन व्यवस्था मे लाभ कम और नुकसान अधिककर गया । मै यह महसूस करता हूँ कि इस असंतुलन और अस्पश्ट विभाजन का सारा दोश नेहरू और अम्बेडकर को है जिन्होने भारतीय समाज व्यवस्था का कम ज्ञान होते हुए भी इसमे इतना गंभीर हसतक्षेप कर दिया।

प्रष्न 6. प्रसिद्ध अर्थषास्त्री भरत डोगरा जी ने जनसत्ता 22 मई मे आगे की राह बताते हुए सलाह दी है कि कांग्रेस पार्टी को मनमोहन सिह जी की उदार अर्थ व्यवस्था पर आगे बढने की नीति पर नही चलना चाहिये क्योकि उन्हे आर्थिक मुदोपर जनादेष नही मिला है। भारतकी जनता से सामम्प्रदायिकता के विरूद्ध उन्हे जानादेष दिया है। आर्थिक उदारीकरण तथा सुधार सुनने मे बहुत अच्छे षब्द है किन्तु इनका परिणाम धातक होता है। डोगरा जी नेमजबूरी कीभाशा मे यह चेतावनी भी दी कि यदि मनमोहन सिह सरकार ने वर्तमान जीत को अपनी अर्थनीतियो की जीत समझ कर पूजीवाद की दिषा मे तेज कदम उठाये तो देष की अर्थ व्यवस्था उसी तरह नुकसान उठा सकती है जिस तरह अन्य पुजीवादी देषो की उठा रही है वर्तमान मे आर्थिक भूंकप मे भारत इसलिये डूबने से बच गया कि उसे पूजीवाद की दिषा मे तेज चलने से रोका गया। अब वैसी भूल होनी ठीक नही ।

डोगंरा जी के तर्क विचारणीय होने से आपकी प्रतिकिया चाहिये।

उत्तर . अर्थ व्यवस्थाए तीन प्रकार की होती है 1. राज्य नियंत्रित 2. राज्य संरक्षित 3. राज्य मुक्त। साम्यवाद और समाजवाद राज्य नियंत्रित अर्थ व्यवस्था के पोशक है तो पूँजीवाद राज्य संरक्षित अर्थ व्यवस्था के । भारत ने इक्यान्नवे के पूर्व राज्य नियंत्रित अर्थ व्यवस्था पर बढने की कोषिष की जिसके परिणाम हम देख चुके है । अब भारत राज्य संरक्षित अर्थ व्यवस्था की दिषा मे बढ रहा है। इन दोनो ही व्यवस्थाओ के अपने अपने गुण दोश है जिन्हे हम देख भी रहे है । डोगंरा जी जो बात कह रहे है वह राज्य नियंत्रित अर्थ व्यवस्था की धिसी पिटी वकालत के अतिरिक्त और कुछ नही है। पूँजीवाद को गाली देना और उस गाली देने मे अमेरिका का नाम जोड देना बहुत चल चुका । अब इस चुनाव ने इस फैषन को कूडे दान मे फेंक दिया है। अब गाली देने से काम नही चलेगा बल्कि विकल्प बताना होगा कि आप राज्य संरक्षित अर्थ व्यवस्था का विरोध क्यो कर रहे है। यदि आप भारत को पुनः राज्य नियंत्रित अर्थ व्यवस्था की काल कोठरी मे ढकेलना चाहते है तो अब ऐसे लोगो को हार मान लेनी चाहिये।

वर्तमान चुनावो मे चार विचारधाराएँ टकरा रही थी 1. वामपंथी 2. भाजपानीत 3.कांग्रेस नीत 4. सत्ता लोलुप

1. वामपंथी संगठन राज्य नियंत्रित अर्थनीति तथा हिन्दु विरोधी धर्म निरपेक्षता के प्रतीक बने 2. भाजपा नीत संगठन जो राज्य संरक्षित पूँजीवाद तथा हिन्दुत्व की ओर झुकी हुई धर्म व्यवस्था के पक्षधर रहे 3. कांग्रेस जो राज्य संरक्षित पूँजीवाद तथा मध्य मार्गी धर्म निरपेक्षता के पक्ष मे रहें। 4. अवसर वादी जो न अर्थनीति मे स्पश्ट है न धर्म निरपेक्षता मे। वर्तमान चुनावों ने पहले और चौथे प्रकार के संगठनों को कूडेदान मे डालकर खेल से बाहर कर दिया है । दूसरे प्रकार को हराकर तीसरे प्रकार को जिता दिया है। मैं डोगंरा जी से सहमत हूँ कि कटटर हिन्दुत्व के विरूद्ध मध्यमार्ग की जीत हुई है जिस पर कांग्रेस को चलना चाहिये। किन्तु अर्थनीति के मामले मे तो जनादेष बिल्कुल स्पश्ट है जिसमे वामपंथ का कोई स्थान नही है। अब यदि कोई कूडेदान मे पहुँचकर भी चिल्लाता रहे तो ऐसे मुददो पर हमे चर्चा भी नही करनी चाहिये । भरत डोगंरा जी आर्थिक मामालो मे भारत सरकार को सलाह देने के पूर्व स्वय सलाह ले कि उनकी अर्थनीति के कूडेदान मे फेके जाने के क्या कारण है। यह स्पश्ट हो चुका है कि भरत डोगरा जी सरीखे अर्थ षास्त्रियो को अब पूँजीवाद और अमेरिका को गाली देने मात्र से कोई पुरस्कार नही

KASHINDIA

मिलने वाला है। अब या तो अर्थषास्त्र की गुण दोश के आधार समीक्षा होगी या मंथन से बाहर होना पडेगा । कूडेदान मे पडे पडे प्रलाप करने से अब लाभ होने के दिन वीते दिनों की बात बन चुकी है।

## पत्रोत्तर

### 1. आचार्य डा. सोमप्रताप गहलोत, षताब्दी नगर मेरठ यू.पी.

मुनिवर बजरंग मुनि जी आपका ज्ञानतत्व मिल रहा है अभी एक पत्र भी मिला ,प्रेशित सामग्री को पढा बहुत अच्छा लगा। किन्तु बहुत सारी बाते समझ के बाहर लगती है। गत 12–13 वर्शो से निरन्तर आपके सम्पर्क मे हूॅ कुछ षिविरो मे भी साथ रहा हूॅ। कुछ द्विअर्थी बाते आपकी हमे विचलित करती है। आप से कई बार सुना है कि हम प्रत्येक संधर्श से दूर रहेगे। सरकार की नीतिओं का विरोध भी नही करगें। फिर क्या करेगें ? जबकि मेरा मानना है कि आज तक जितने समाज सुधारक या जननायक हुए है उन्होने तत्कालीन अन्याय का विरोध किया है । युद्ध ,संधर्श की अनेक कथाये प्रचलित है । आपने अपने आन्दोलन के अनेक विग बनाकर ऐसे लोगो के हाथ में सौप दिये जो अपने स्वार्थ वष आप का पूरी तरह समर्पित है जैसे वर्तमान राजनीति मे नेताओ के चाटुकार है जिन्हे आप चमचा कहते है । प्रायः स्वस्थ वैचारिक मंथन से आप बचते है। गतवर्श नई दिल्ली धर्म षाला मे मिटिग मे मैने आपसे कहा था कि आपको मुझे दो दिन एकान्त मे विचार विमर्ष करना है तब कोइ आन्दोलन की रूप रेखा तय करे, स्मरण हो वर्श हो गया है अभी बहुत षेश है। आप समाज को दिषा दे सकते थे यदि सच्चे साथिओ की पहचान कर पाते । षेश कुछ बाकी आगे मिलने पर सबको मेरा नमस्कार

उत्तर . मैंने ज्ञान तत्व के सभी पाठको को एक पत्र इस प्रकार लिखा था।" पच्चीस दिसम्बर को समाजार्पण मे आप आये होगे या आपको ज्ञानतत्व से विवरण मिला ही होगा । हम अन्तिम रूप से इस निर्णय पर पहुॅच चुके है कि

1. संचालक और संचालित के बीच बढती दूरी के कम किये बिना इस समस्या के समाधान की षुरूआत नही हो सकती। दुर्भाग्य से यह दूरी बढती ही जा रही है जिसमे राजनीतिज्ञ भी षामिल है और धर्म गुरू सामाजिक कार्यकर्ता आदि भीं
2. संचालक और संचालित के बीच की दूरी कम करना ही इस समस्या का एक मात्र समाधान है। इसके लिये दो अलग अलग दिषाओ से काम करना होगा (क) संचालितो को षराफत से समझदारी की ओर बढने की प्रेरणा देकर संचालित सषक्तिकरण करना। (ख) संचालको पर समाज की निर्भरता कर करके संचालक कमजोरी करण अभियान
3. संचालित सषक्तिकरण के लिये मानसिक व्यायाम करना चाहिये। इससे व्यक्ति की स्वय की समझदारी भी बढती है तथा आत्मबल भी मजबूत होता है । दूसरी ओर संचालको पर से निर्भरता कम करने के लिये लोक स्वराज्य अभियान को मजबूत करना चाहिये।
4. अब तक पूरे विष्व मे ज्ञानतत्व एक मात्र ऐसी पत्रिका है जिसने दोनो दिषाओ मे यह अभियान षुरू किया है। यह कोई विचार प्रसार की पत्रिका नही है जो कोई नया विचार फैलावें यह ता सिर्फ विचार मंथन तक सीमित है जो आपके प्रारंभिक मानसिक व्यायाम मे सहायक है। इसका प्रारंभिक विस्तार सिर्फ भारत तक ही है। अब 25 दिसम्बर के बाद इस दिषा मे और सक्रियता बढेगी।
5. ज्ञानतत्व का पूर्वाध आपकी मानसिक षक्ति का विकास करेगा तथा उत्तरार्ध लोक स्वराज्य की दिषा मे। पूर्वार्ध संचालित सषक्तिकरण है और उत्तरार्ध संचालक कमजोरी करण।
6. आप ज्ञानतत्व से जुडे हुये है। अब इस यज्ञ मे आप की आहुति चाहिये। आप आहुति स्वरूप ज्ञानतत्व के नये ग्राहक बनाकर सुची हमारे अम्बिकापुर कार्यालय, दिल्ली कार्यालय, सेवाग्राम आश्रम कार्यालय, कुरू क्षेत्र कार्यालय, उज्जैन कार्यालय को दे सकते है आप किसी भी कार्यालय मे षुल्क भी जमा करा सकते है अम्बिकापुर कार्यालय का संचालन तो अभी मेरे जिम्मे है ही दिल्ली श्री ओम प्रकाष जी दुबे सेवाग्राम श्री अविनाष काकर्डे उज्जैन श्री राम कृश्ण पौराणिक कुरूक्षेत्र श्री रणबीर जी षर्मा देख रहे है। आप षुल्क भेज दे या सूचना दे दें षुल्क तो बाद मे भी आ जायेगा। आजीवन षुल्क 500 वार्शिक षुल्क 100 तथाविषेशतौर पर वार्शिक 50 तक मान्य है। षुल्क आप ग्राहको से एकत्रित करके भेज सकते है या अपनी ओर से भी ।
7. व्यवस्था परिवर्तन की दिषा मे यह हमारा महत्वपुर्ण कदम है । आपका सर्किय सहयोग मिलेगा I आपने अपना षुल्क न भेजा हो तो भेज सकते है अपना पता लिखते समय पिन कोड नम्बर ई मेल आदि की भी जानकारी हो तो लिखिये जिससे कि रिकार्ड हो सके।"

KASHINDIA

कुछ पाठको ने उत्तर दिये और तीन चौथाई पाठको के तो उत्तर ही नही मिले। कुछ पाठको ने गंभीरता पूर्वक ग्राहक बनाकर सहयोग किया भी अभी कुछ पत्र आ भी रहे है।

वही पत्र आपको अर्थात गहलोत जी को भी गया था। मैने आपसे एक दो ग्राहक बनाने का सहयोग मांगा था किन्तु आपने सहयोग देने के स्थान पर मार्ग दर्षन की झडी लगा दी। यह मार्ग दर्षन तो आपसे बहुत लेता रहता हूॅ। मुझे जिस सहायता की आवष्यकता है उसका तो आपने कही उल्लेख तक नही किया। हो सकता है कि आपने पत्र पढा ही न हो या यह भी संभव है कि मेरी मांग आपके स्तर से बहुत नीचे की हो । मेरा आपसे निवेदन है कि आप एक बार मेरी क्षमता और आवष्यकता को भी समझने की कृपा करें।लम्बे चौडे उपदेष की बाते तो आपसे मिलती ही रहती है और मिल ही जायेगी

आपने मित्रो के प्रति सतर्क किया। ऐसी सलाह और भी मित्रो ने दी है । इसीलिये आजकल मै सलाह लेने मे सर्तक रहता हूॅ जिसका आप बुरा मान गर्ये। आवष्यकता अनुसार आपकी भी सलाह अवष्य ली जायगीं । अभी तो ज्ञानतत्व पाठक संख्या पर बात चल रही है।

## 2. श्री सर्वनारायण दास चुना भठी दरभगा विहार

ज्ञानतत्व के माध्यम से समाचार मिलता रहता है। आपने अग्रिम पंक्ति से कुछ पीछे हटकर जिम्मेदार की भूमिका अपने साथिओ को सौप पीछे से साथ चलने की जो भूमिका स्वीकार की है वह अपने आपमे बडी विलक्षण वस्तु है ।एक विलक्षण प्रतिभा की झॉकी ऐसे निष्यय मे मिलती है। जिसके लिये जितनी सराहना की जाय वह ज्यादा नही। हमारे आपके नसीब मे सफलता है वा नही वह उपर वाला ही जाने । लेकिन सामने खडी दुनिया के आगे षरणागत न होकर इसे बदलने व उखाडने की बात जिनके हित को झकझोरती है ऐसे लोग अवष्य ही धन्य है। । लेकिन अभी जो आपने तय किया वह तो आपके चिंतन मे कलष के समान मुझे दिख रहा है

लगता है कुछ बंधुओ ने समाजार्पण का असली आषय नही समझा है इसमे आष्चर्य भी नही । आपके निर्णय के संदर्भ में मुझे एक प्रसग याद हो आता है 1968 मे पूसारोड विहार मे विनोबा जी से मिलने जे.पी. तथा सर्वसेवा संघ के प्रमुख लोग पहुॅचे हूये थे। इस समय विनोबा जी ने उनसे कहा " वुद्ध के बाद उनके षिश्यो मे मतभेद हुआ और अलग अलग चार धाराएं निकली । खैर यह विचार भेद तत्वज्ञान के क्षेत्र मे प्रकट हुआ और लोक जीवन मे कोंई विचलन अस्तव्यस्ता नही आई। लेकिन गांधी जी के बाद इनके प्रमुख साथिओ मे जो मतभेद प्रकट हुये इस कारण लोगो की श्रद्धा टूट गयी और राश्ट्र का जीवन क्षत विक्षत हो गया गांधी जी अंत अंत तक खुद सलाह देते रहे। अगर आखिर से कुछ साल पहले ही पीछे करने इन्होने इन साथियो पर ही। आपसे चर्चा विचार कर एक राय अंक निर्णय पर पहुॅचने की जिम्मेदारी सौंप दी होती तो व्रीव विरोध मतभेद पैदा हुऐ तथा विधटन विखराव राश्ट्र के जीवन मे आरंभ हो गया जिस टेजेडी से बचा जा सकता था।

यधपि यह मिसाल बहुत बडी हो जाती है तथापि उसकी छाया आपके इस निर्णय मे मुझे स्पश्ट दिखती है । आपको इसके लिये मेरे जैसे अदने आदमी की ओर से बार बार बधाई।

उत्तर . आपने मेरे कदम की सरहाना की इससे आत्मबल मजबूत हुआ। वर्तमान समय मे कुछ गिने चुने ही तो लोग दिख रहे है जो इस आपा धापी से दूर रहकर अपने अनुभव और ज्ञान उपयुक्त षिश्यो को देते रहते है। ऐसे ही व्यक्तियो मे आप है और मै एक षिश्य के समान आप जैसे अनूभवों का लाभ उठाता रहा । पच्चीस दिसम्बर का निर्णय मेरे लिये कठिन परीक्षा का समय था। मेरे साथी इसके लिये तैयार नही थें दूसरी और आप सब का अनुभव और गांधी जी का उदाहरण धूम फिरकर वही पहुॅच रहा था जो मैने किया। आपका मार्ग दर्षन तो सदा मिलता ही रहता है किन्तु मेरे निश्कर्शो की सराहना से मुझे बहुत संतोश हुआ। एक षिश्य को गुरू से और कुछ चाहिये भी नही

## 3. श्री एम. एस. सिगला अजमेर राजस्थान

KASHINDIA

प्रश्न. अध्यात्म (आध्यात्म नही अध्यात्म : अधि+आत्म), धर्म, समाज और राज्य षब्दो के अर्थो या अवधारणाओं मे अन्तर चाहा गया हैं वस्तुत ये षब्द पर्यायवाची न होकर अपने आप मे स्वतंत्र और भिन्न अर्थवाले षब्द है। अतः इनमे अन्तर की बात न करके इनकी स्पश्ट अवधारणाओ की बात करना संगत होगा।

इनमे षब्दो मे से आपने पहले राज्य को लिया है । आपने उसे सही समझा है । तब भी इस षब्द की व्याख्या आपके षब्दो मे ही थोडे संषोधन के साथ यों प्रस्तुत है आदर्ष राज्य की भूमिका मे समाज की प्रत्येक इकाई को सुरक्षा और न्याय दिलाना सुनिष्चित होता है .....। (आगे चलकर आपने क्षोभ व्यक्त करते हुए लिखा है कि राज्य व्यवस्था रक्षक के स्थान पर विध्वंसक रूप धारण करती जा रही है । इस विशय मे कथन यह है कि लोक तन्त्र मे ऐसा होना स्वाभाविक है। इसके अनेक कारण है। उनपर सम्प्रति चर्चा करना सम्भव न होगा )

धर्म– इस षब्द के निहितार्थ मे बडी विसंगतिया आगई है। अतः इसे समझने समझाने मे कुछ कठिनाई होगी। तब भी धर्म षब्द का सीधा अर्थ कर्तब्य से व गुण से है। इसे अंग्रेजी के प्रॉपटी षब्द के अर्थ मे भी लिया जा सकता है। इसका अर्थ नैसर्गिकता से ग्रहण किया गया है जैसे अग्नि का धर्म उश्मा देना जलाना है । इसी कारण वस्तुतः हिन्दू धर्म कोई धर्म नही है । यह सनातन धर्म है। पच्च तत्वो के गुण धर्मो की भाति मानव के भी कुछ धर्म है। परन्तु साधारणतया मानव उन्हे प्राकृतिक तत्वो कीर तरह धारण नही करता इसलिये मानव के क्या धर्म है या होने चाहिये उन्हे व्याख्यायित कर दिया गया है विदेषी भाशा संस्कृति के सम्पर्क मे आने के कारण धर्म को उर्दू के मजहब और अंग्रेजी के रिलिजन षब्द का समानार्थी मान लिया गया जो सही नही है । धर्म का इस अर्थ मे आरम्भ इस्लाम धर्म के आगमन के साथ कहा जा सकता है। उनका धर्म इस्लाम कहा गया। उसके सापेक्ष मे हिन्दु धर्म चल पडा विषेश रूप से धर्म परिवर्तन की व्यवस्था को लेकर । वस्तुत ये पन्थ कहे जाते है और कहे जाने चाहिये। इस विशय मे ऐतिहासिक गडबडी भी हुई जब इतिहास मे यह कहा गया कि सम्राट अषोक ने बोद्ध धर्म फैलाने के लिये अपनी सन्तति को विदेषो मे भेजा । वस्तुतः उसे बौद्ध धर्म की बजाय बोद्ध मत कहा जाना चाहिये था। धर्म के बारे मे कही पढा था धर्म इति धारयेति। अर्थात जिसे धारण किया जा सके वह धर्म है। तब सत्य बोलना चोरी न करना षौच का पालन करना आदि मानव द्वारा धारण करने योग्य कर्तव्य मानकर उन्हे मानव धर्म बताया गया। कालान्तर मे धर्म के नाम पर जो संगठन बने है वे वस्तुत :धर्म पर आधारित न होकर किसी महान पन्थ प्रवर्तक के नाम पर है। इनके स्पश्ट उदाहरण है कबीर पंथ आदि। तात्पर्य यह कि सनातन धर्म तो सनातन ही रहा और रहेगा भी । कालान्तर मे धर्म के बारे इतना स्पश्टिकरण काफी होना चाहिये।

अध्यात्म– जिस प्रकार बूंद सागर का अंष होकर उसको प्रतिपादित करती है उसी प्रकार जीव की आत्मा उस परम सत्ता परमात्मा काअंष कहा गया है। इस बात को माननेवाले जब आत्मोन्नति मे विष्वास रख कर आत्मलीन होकर आत्मिक उन्नति करते है तब वह अध्यात्म कहलाता है । इसमे यह कहना ठीक नही लगता कि षराफत बढती जाती है समझदारी धटती जाती है । इसके सापेक्ष मे इतना भर कहा जा सकता है कि आध्यात्म मार्गवाले मानव के लिये समझदारी की आवष्यकता धटती जाती है। धटते धटते वह षून्य पर भी आजाती होगी क्याकि उसका सम्बन्ध सांसारिकता से होता है अध्यात्म से नही। और आगे चलकर षायद आवष्यकता रह ही नही जाती।

## 4. श्री रवीन्द्र सिह पत्रकार गुना मध्यप्रदेष

डा. अम्बेडकर का मैं प्रषंसक हूँ किन्तु उन्होने संविधान बनाते समय दो भूलें की 1 जातीय भेदभाव मूलक प्रावधानो को पंद्रह वर्श बाद क्रमषः हटाने के प्रावधान का अभाव 2 प्रीवीपर्स को किसी सीमा मे नही बांधना। इनके साथ साथ अम्बेडकर का अंग्रेजी प्रेम भी देष को बहुत नुकसान कर गया। इस संबंध मे आपकी सोच क्या है?

उत्तर . अम्बेडकर जी ने अपने आन्दोलन की षुरूआत श्रम आंदोलन के रूप मे की थी। उनका मस्तिश्क श्रम षोशण के विरूद्ध था किन्तु मन के संस्कार उन्हे जातीय संधर्श की ओर खीच कर ले गये। गांधी जी वर्ग समन्वय के पक्षधर थे और अम्बेडकर जी वर्ग संधर्श के। गांधी जी हार गये और अम्बेडकर जीत गये। मैने ज्ञानतत्व अंक एक सौ पचहत्तर मे जातीय आरक्षण रूपी जिस खूंटे की बात की है वह वही भूल है जिसकी तरफ आपने इषारा किया है। यदि अम्बेडकर जी ने अपने जातीय संस्कारो को दूसरे नम्बर पर रखकर श्रम को पहला महत्व दे दिया होता तो आज भारत का स्वरूप ही कुछ भिन्न

KASHI INDIA

होता। अम्बेडकर जी के मन मे प्रधान मंत्री बनने की उत्कट इच्छा थी। अम्बेडकर जी स्पश्टवादी थे। नेहरू जी चालाक थे। दोनो के ही मन मे हिन्दु धर्म की अच्छाइयो और बुराइयो के बीच संतुलन नही था। दोनो ही हिन्दु धर्म की कुछ बुराइयो से ज्यादा व्यथित थे। दोनो ने इन बुराइयो को दूर करने के प्रयत्न मे जन्दबाजी से काम लिया। नेहरू जी ब्रहमण थे और अम्बेडकर जी  वर्ण। नेहरू जी चालाक थे और अम्बेडकर स्पश्ट। नेहरू जी ने इस मामले मे ऐसा स्वरूप बनाया कि सबकुछ उनकी सोच अनुसार हुआ और अम्बेडकर जी सवर्णो के बीच खलनायक सिद्ध होकर एक वर्ग विषेश तक सिमट गये।

अम्बेडकर जी ने संविधान मे सम्पत्ति को मूल अधिकार मे डाला था। यह उनकी दीर्धकालिक सोच थी। सम्पति तो मूल अधिकार होती ही हैं किन्तु बाद मे राजनेताओ ने मनमानी करके उसे मूल अधिकार से निकाल दिया। यह विशय कभी बाद मे विस्तृत चर्चा मे आयगा ही।

अम्बेडकर जी ने दर्षन की व्याख्या करते हुए कहा था कि ईष्वर जीव प्रकृति आदि के प्राचीन रहस्यों पर विचार मंथन को दर्षन मानने की अपेक्षा वर्तमान की स्थिति और भविश्य चर्चा को दर्षन मानना चाहियें। मै अम्बेडकर जी की भावना से इस संषोधन केसाथ सहमत हूँ कि हम दर्षन षब्द के साथ छेडछाड न करके अपनी प्राथमिकताएँ बदलकर ईष्वर जीव प्रकृति के स्थान पर वर्तमान और भविश्य की योजनाओ पर कर ले।

भाशा को मै कभी भावनात्मक मुददा नहीमाना । भाशा के संबंध मे किसी को कोई प्रेम दिखाने की आवष्यकता नही है। यदि आप कोई प्रेम दिखाना ही चाहते है तो गरीब ग्रामीण श्रमजीवी को प्राथमिकता दीजिये। भाशा के मुददे तो बहुत पीछे के मुददे है।

मै पहले भी मानता था और अब भी मानता हूँ कि गांधी जयप्रकाष लोहिया की तुलना मे नेहरू अम्बेडकर पटेल का कद बहुत नीचे था भी और है भी। इन दो समूहो को इसी क्रम म रखना उचित होगा।

## अपनो से अपनी बात

ज्ञान यज्ञ परिवार के कुछ साथियो की बैठक इक्कीस और बाइस मई को रामानुजगंज मे सम्पन्न हुई। बैठक मे निम्न निश्कर्श निकले

1. तीन प्रकार के अलग अलग ग्रुप स्वतंत्र रूप से काम करते रहे

क लोक स्वराज्य अभियान ख ज्ञान यज्ञ परिवार ग ट्रस्ट

क लोक स्वराज्य अभियान। यह संगठन समूह तंत्र कमजोरीकरण अभियान के अन्तर्गत राज्य सत्ता के अकेन्द्रीकरण के पक्ष मे अभियान चलाता रहे तथा इस दिषा मे काम कर रहे विभिन्न संगठनो से तालमेल बनावे। लक्ष्य एक सूत्री होना चाहिये कि परिवार गांव जिले को संवैधानिक तथा स्वतंत्र अधिकार मिले। अन्य मांगे पूरक के रूप मे तो हो सकती है किन्तु भूल नही । यदि कोई अन्य स्वतंत्र मांग राज्य के अधिकारो मे बंटवारा करने वाली हो तो हम ऐसी मांग के साथ तालमेल कर सकते है किन्तु यदि कोई मुख्य मांग सुविधा के लिये जुडी हो तो हम उसका समर्थन नही कर सकते। वोटर पेंषन अथवा अन्य किसी तरह की आर्थिक मांग यदि लोकस्वराज्य को लक्ष्य और सुविधा की मांग को पूरक बना ले तब ही उस पर विचार संभव है किन्तु यदि वह मुख्य मांग के रूप मे स्थापित है तो उससे हमारा संबंध संभव नही है । इस अभियान के अन्तर्गत एक अगस्त से एक माह तक लोक स्वराज्य संवाद के रूप मे कुछ स्थानो पर अपने तंत्र प्रति निधि से लोक के प्रत्यक्ष संवाद की

KAASH INDIA

योजना बनी है। इस योजना के संचालक श्री जय किषन जी धनबाद वाले है। इसमे  अपने निर्वाचित प्रतिनिधियो या अन्य तंत्र के लोगो से प्रत्यक्ष जनता के साथ षालीनता पूर्वक किसी कानून का उल्लंधन न करते हुए चार विशयो पर संवाद होगा

1 भारतीय संविधान के अन्तर्गत परिवार और गाव को कौन कौन से स्वतंत्र अधिकार है जिनमे तंत्र या उससे जुडी इकाइयॉ कोई कटोती या हस्तक्षेप नही कर सकती ?

2 यदिहमारा निर्वाचित जन प्रतिनिधि बीच मे ही हमारे विरूद्ध काम करने लगे तो हम उसे किस प्रकार रोक या हटा सकते है ?

3 तंत्र से जुडे लोग अपने वेतन भत्ते किस सीमा तक बढा सकते है। ऐसी सीमा रेखा होनी चाहिये या नही? इस सीमा रेखा का कोई तालमेल सामान्य औसत जीवन स्तर से होना चाहिये या नही? वेतन निर्धारण विचार समिति मे वेतन भोगियो के अलावे अन्य लोगो का भी प्रतिनिधित्व है या नही और होना चाहिये या नही ।

4 कोई स्थानीय मांग। या टैक्स से जमा राषि मे से व्यवस्था खर्च के बाद षेश बचा धन प्रति व्यक्ति के बीच समान रूप से वितरण की व्यवस्था पर चर्चा।

यदि जन प्रतिनिधि मिलने या आने से इन्कार कर दे तो उसके विरूद्ध आंदोलन । किन्तु यदि मिलते है तो अपना व्यवहार पूरी तरह सम्मान जनक। इस योजना के अन्तर्गत श्री जयकिषन जी दो माह की राश्ट्रीय स्तर पर या विहार झारखंड केन्द्रित लोक स्वराज्य यात्रा का प्रारूप बनाकर विचारर्थ प्रस्तुत करेगे।

ख ज्ञान यज्ञ परिवार। ज्ञान यज्ञ परिवार लोक सषक्तिकरण अभियान चलायेगा। इसके लिये तीन योजनाऍ बनी।

1. एक अगस्त से एक वर्श तक चौबीस विशय चुनकर साधना टीवी चैनल पर दोपहर तीन बजे के बाद प्रतिदिन बीस मिनट की एक चर्चा।  एक माह मे दो विशयो पर चर्चा होगी। रविवार छुटटी होगी।प्रथम पखवाडे मे राजनैतिक संवैधानिक आर्थिक बौद्धिक विशयो पर चर्चा होगी तथा दूसरे पखवाडे मे धार्मिक सामाजिक पारिवारिक तथा भावनात्मक विशयो पर।इस पूरे कार्यक्रम क प्रारभ मे मेरा चालीस मिनट का विशय प्रवेष कराकर षेशसमय प्रष्नोत्तर आयोजित होगा इस टीवी चर्चा को ज्ञान तत्व मे भी  प्रकाषित कराकर विस्तारित किया जायगा तथा सीडी आदि बनाकर भी बेची जायंगी।

2. ज्ञानतत्व की सदस्य संख्या दस हजार की जा रही हे जिसमे पांच हजार तक सषुल्क तथा पांच हजार तक निषुल्क ग्राहक हो सकते हैं प्रत्येक प्रमुख सदस्य से अपेक्षा की गई है किवह एक सौ ग्राहक अवष्य बनावे जो दोनो वर्गो को मिलाकर हो सकते है ।ऐसे सौ ग्राहको से निरंतर वैचारिक संपर्क रखने का काम भी उन्ही का होगा। अब तक यह काम श्री रामकृश्ण पौराणिक उज्जैन , श्री कृश्ण लाल रूगटा धनबाद श्री ईष्वर दयाल जी नालदा वालो ने कर लिया है । श्री अषोक त्रिपाठी वाराणसी श्री जे.पी गुप्ता छतरपुर श्री श्रुतिवन्तु दुबे सीधी पूर्व से ही सक्रिय है। अन्य साथियो से चर्चा कर यह सौ की टीम बनाने का प्रयास कर लेगें ज्ञान तत्व का पूर्वाध विचार मंथन के लिये पूर्ववत सुरक्षित रहेगां उत्तरार्ध  चर्चा मे रहेगा

3. कुछ त्रिदिवसीय यज्ञ आयोजित होगे।इसमे सर्व प्रथम आधे धटे का यज्ञ रखकर षेश समय मे प्रतिदिन छ छ धटे की एक एक विशय पर स्वतंत्र चर्चा रखी जायगी ऐसा त्रिदिवसीय पहला यज्ञ श्री कृश्ण लाल रूंगटा के आमत्रण पर धनबाद जिला झारखण्ड मे रखा जा रहा है।प्रयास किया जायेगा कि विशय चौबीस चुने हुये विशयो मे से ही हो। यज्ञ चर्चा को टीवी तथा ज्ञानतत्व तक भी जोडा जायेगा

ट्रस्ट– ट्रस्ट पूरी तरह एक स्वतंत्र इकाई होगी। ट्रस्ट से लोकस्वराज्य अभियान या ज्ञान यज्ञ परिवार का कोई संबंध नही होगा।जिस तरह लोक स्वराज्य अभियान और ज्ञान यज्ञ परिवार की स्वतंत्र भूमिका होगी उसी तरह ट्रस्ट की भी रहेगी। ट्रस्ट अपने पैसे से किसी भी संगठन को सहायता कर सकता है किन्तु ट्रस्ट का पैसा या तो तंत्र कमजोरीकरण अभियान मे लगेगा या लोक सषक्तिकरण मे। कोई अन्य सेवा कार्य या समाज सुधार केकार्य ट्रस्ट नही करेगा । ट्रस्टका पहला औपचारिक सम्मेलन अगस्त माह तक करने की योजना है।

KASHI INDIA